भारत में छपनेवाली कुल किताबों में हिंदी की हिस्सेदारी 26 प्रतिशत है, बावजूद इसके हिंदी में छपी किताबों की इतनी चर्चा नहीं होती. *फ़ेमिना* ने इस बार अपने वार्षिक कहानी विशेषांक में पाठकों को वर्ष के सर्वश्रेष्ठ लेखन से रूबरू कराने का निश्चय किया है. हमें जो किताबें मिलीं, वो कंटेंट, शैली और पहुंच के मामले में उम्दा हैं ही, कइयों में माद्दा है कालजयी किताबों की सूची में शामिल होने का. आइए, उन किताबों और उनके बारे में लेखकों, समीक्षकों तथा पाठकों की राय से रूबरू होते हैं.

प्रस्तुतिः **शिल्पा शर्मा, अमरेन्द्र यादव** और **सोनम गुप्ता**

वर्ष 2014-15 की बेहतरीन किताबें

कहानी, उपन्यास, कविता, स्त्री विमर्श और अनूदित

वर्ष के सर्वश्रेष्ठ लेखन को सम्मान देने की अपनी यह नई पहल शुरू करने से पहले हमारे दिमाग़ में तमाम सुनी-सुनाई बातें थीं, जैसे-हिंदी में अच्छी किताबें नहीं आ रही हैं. हिंदी में लिखना कूल नहीं है. हिंदी के लेखक बंद कमरे में बैठकर लिखते हैं. हिंदी के पाठक कम हो रहे हैं... ये तमाम आशंकाएं, चिंताएं कितनी निराधार हैं, ये हमने इस वर्ष प्रकाशित हिंदी की किताबों को पढ़ते हुए जाना. हमारी टीम और पैनलिस्ट ने चुनी कहानी, उपन्यास, कविता, स्त्री विमर्श और अनूदित इन पांच विधाओं की सर्वश्रेष्ठ किताबें.

इन किताबों में आप पाएंगे शहरों के शोर-शराबे के बीच का अकेलापन खोजते-दिखाते कथानक. पन्नों पर बिखरी हुई छोटे शहरों और क़स्बों की ज़िंदगियां. गांवों की पीड़ा और छटपटाहट को स्वर देते शब्द. मोहल्ले में खेलता-कूदता बचपन भी यहां है तो ग्लोबलाइज़ेशन से प्रभावित पीढ़ी भी. कुछ किताबें आपको वर्तमान को नए नज़रिए से देखने को प्रेरित करेंगी तो कुछ ऐतिहासिक क़िरदारों को हमारे बीच ला खड़ा करती हैं.

चयन प्रक्रिया

हमने सबसे पहले देश के विभिन्न प्रकाशकों से उनके यहां से प्रकाशित इन पांचों विधाओं की सर्वश्रेष्ठ किताबें आमंत्रित कीं. उनसे मिली किताबों को पढ़ने के बाद हमारी टीम ने हर विधा की पांच बेहतरीन किताबें चुनीं (स्त्री विमर्श के अलावा. क्योंकि इस विधा की तीन किताबें ही हमें मिली थीं और तीनों अपने आप में बेहतरीन थीं). फिर हमने लेखकों, समीक्षकों और सामयिक किताबें पढ़ने में रुचि रखनेवाले हिंदी के जानकारों का एक 10 सदस्यी पैनल बनाया. हमने पैनल के दो-दो सदस्यों को किसी एक विधा की चुनी हुई किताबें पढ़ने के लिए दी. इस तरह हर विधा पर मिले पांच मतों (दो पैनलिस्ट के और तीन हमारी टीम के सदस्यों के) के आधार पर हमने पुस्तकों की रैंकिंग तय की.

विधाः कहानी

ज़िंदगी आइस पाइस

(निखिल सचान, हिंद युग्म)

''हल्के-फुल्के अंदाज़ में दिल की गहराई तक उतरनेवाली कहानियों का संग्रह है ज़िंदगी आइस पाइस. इसमें बाल मन का चित्रण है तो युवाओं की उलझन और समस्याओं को भी लेखक ने मानो बोलते-बतियाते प्रस्तुत कर दिया हो. संग्रह की कहानियां पाठकों को बांधे रखने में सक्षम हैं.'' **-कुमार अमित**

''निखिल के कहानी संग्रह का हर पात्र अपने अतीत की किसी न किसी यादों से जुड़ा है. हर कहानी का अपना अलग इतिहास है, जो अंतर्मन के कोने में विराजमान है और वर्तमान का कोई घटनाक्रम उसे पुनः स्मृति के परदे पर ला खड़ा करता है. कहानियां-फिर एक परवाज़, विक्की मल्होत्रा का प्यार, अटरिया ›

फ़ोटो: शटरस्टॉक

पर लोटन कबूतर रे आदि में कहानीकार ने भूली-बिसरी यादों को पिरोया है.''

-सुधा सक्सेना

छोटे शहर की लड़कियां

(दिनेश पालीवाल, बोधिप्रकाशन)

''छोटे शहर की लड़कियां की कहानियां औसत से लेकर औसत से ऊपर तक की है. परंतु यदि इस पुस्तक की प्रति हाथ लग जाए तो आप इसे दरकिनार भी नहीं कर सकेंगे. इसकी कुछेक कहानियां, इसका नाम क़ाबिल पुस्तकों की सूची में दर्ज करवाने में सक्षम हैं.''

-कुमार अमित

''छोटे शहर की लड़कियां के माध्यम से दिनेश पालीवाल ने समाज के हर पहलू को बहुत ही यथार्थ और सटीक उदाहरणों के साथ प्रस्तुत किया है. हर कहानी समाज के एक नए स्वरूप से परिचित कराती है. कहानियां-देहजीवी, पश्चाताप, अंतर्जीवन का उजला पृष्ठ, सीनियर सिटिजन, छोटे शहर की लड़कियां विशेष रूप से समाज की वास्तविकताओं और भ्रष्ट तौर-तरीक़ों से परिचित कराती हैं.''

-सुधा सक्सेना

कोठागोई

(प्रभात रंजन, वाणी प्रकाशन)

''इस किताब में क़िस्से हैं उन गायिकाओं के जिनके हिस्से में गुमनामी और बदनामी आई है. कुछ कथ्य, कुछ तथ्य, कुछ गल्प तो कुछ किंवदंती से लबरेज़ यह पुस्तक उस इतिहास की सैर कराती है, जिसे सभ्य समाज ने जबरन रसिकमिजाज़ी के प्रांगण में पटक दिया. इसमें मुज़फ़्फ़रपुर के उस स्थान की कहानी है, जहां सरस्वती और लक्ष्मी का एक साथ बोलबाला रहा. वह पाठकवर्ग जो गणिका और बाई को एक इज़्ज़त वाला नाम समझते हैं, उनके लिए यह पुस्तक पठनीय, रोचक और कई मामलों में ज्ञानवर्धक भी है.''

-कुमार अमित

''कोठागोई में उस समय के इतिहास का वर्णन है, जब संगीत सामान्य परिवारों में नहीं सीखा जाता था, बल्कि एक वर्ग विशेष द्वारा ही गाया जाता था. शास्त्रीय संगीत की ठुमरी, दादरा, और गज़लें, जिन्हें सुनकर असीम आनन्द की अनुभूति होती है, उन्हें गानेवालियों को समाज में शापित माना जाता रहा है. लेखक ने हर कहानी में एक नए चरित्र से परिचत करवाया है. कोठागोई में गुमनाम गायिकाओं के क़िस्से है, जो आज भी परिचय की मोहताज हैं.''

-सुधा सक्सेना

कैसा आदमी हूं मैं

(अरुण अस्थाना, पेंगुइन)

''कैसा आदमी हूं विविध विषयों का कथा संकलन है, जिसके पात्र आपको अपने इर्द-गिर्द या ख़ुद में मिल जाएंगे. कुछ कहानियां भले ही नब्बे के दशक की हों, परंतु लेखक की भाषा कई जगहों पर ऐसी है, जो हिंदी के नए लेखन में देखने मिलती है.''

-कुमार अमित

''कथाकार ने रोज़मर्रा ज़िंदगी की घटनाओं को बहुत ही सरलता से व्यक्त किया है. संग्रह की कहानियों में चल झूठे, कैसा आदमी हूं मैं, तर्पण, केतली भर अंधेरा के पात्र ऊपर से चाहे जैसे भी हों, लेकिन मन से ईमानदार और संवेदनशील हैं. भाषा में इतना प्रवाह और आत्मीयता है, जो पात्र के बारे में जानने की इच्छा अनवरत जगाए रखती है.''

-सुधा सक्सेना

मरें तो उम्र भर के लिए

(आशुतोष, भारतीय ज्ञानपीठ)

''सहज और सरल भाषा में लिखी गई मरें तो उम्र भर के लिए की कहानियां आम आदमी के रोज़मर्रा के जीवन को शब्द देती हैं. इसमें कहीं समाज का दोगलापन है तो कहीं उसकी मजबूरियां. यह एक पठनीय संग्रह है.''

-कुमार अमित

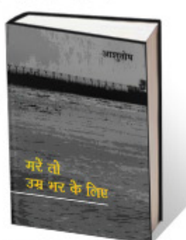

''संग्रह की कहानियों में गहरी आत्मीयता है. हर पात्र आम आदमी से जुड़ा प्रतीत है. रोज़मर्रा की घटनाओं को पूरी ईमानदारी और सरलता से प्रस्तुत किया गया है. हर कहानी चाहे वह पिता का नाच हो या दादी का कमरा पाठक को अपनी-सी लगती हैं, यही लेखक की सबसे बड़ी उपलब्धि है.''

-सुधा सक्सेना

कहानी संग्रह

- **बड़ी बेगम***, आचार्य चतुरसेन, राजपाल ऐंड सन्ज़
- **ज़िद्दी रेडियो**, पंकज मित्र, राजकमल प्रकाशन
- **मरें तो उम्र भर के लिए**, आशुतोष, भारतीय ज्ञानपीठ
- **कैसा आदमी हूं**, अरुण अस्थाना, पेंगुइन
- **तीन रोज़ इश्क़**, पूजा उपाध्याय, पेंगुइन
- **पेंटिंग अकेली है**, चित्रा मुद्गल, सामयिक प्रकाशन
- **छोटे शहर की लड़कियां**, दिनेश पालीवाल, बोधि प्रकाशन
- **कोठागोई, प्रभात रंजन**, वाणी प्रकाशन
- **मोर का पंख तथा अन्य कहानियां,** टेकचंद, वाणी प्रकाशन
- **ज़िंदगी आइस पाइस**, निखिल सचान, हिन्द युग्म
- **कश्कोल**, प्रियंवद, संवाद प्रकाशन

विधा: उपन्यास

हाता रहीम

(वीरेंद्र सारंग, राधाकृष्ण प्रकाशन)

''हाता रहीम कई मायनों में पुराने खांचों को तोड़ने और कुछ नए प्रतिमान स्थापित करने वाला उपन्यास है. यहां कई मुख्य क़िरदार और उनकी उपकथाएं नहीं हैं, यहां सिर्फ़ देवीप्रसाद हैं और उनकी आंखें हैं जो हर बात पर ठहरती हैं. देवीप्रसाद जनगणना में बतौर प्रगणक अपनी ड्यूटी से जान छुड़ाना चाहते हैं, लेकिन जब उन्हें यह ड्यूटी करनी पड़ती है तो पूरे मनोयोग से करते हैं और पाठक को एक ऐसी यात्रा पर ले जाते हैं, जहां नई बस्ती और हाता रहीम की बजबजाती गंदगी के बरक्स एक सुखी जीवन का संभावित चित्र जिजीविषा की हद तक जाकर खींचते हैं.'' **-विमल चन्द्र पाण्डेय**

''कहने को वीरेंद्र सारंग का हाता रहीम जनगणना पर आधारित एक उपन्यास है पर सच में जनगणना तो गांव को आधुनिक परिवेश में, भीतर-बाहर से गहरे जानने-समझने का एक उपक्रम है. ग्रामीण जीवन, प्रकृति, परिवेश और आस्था-विश्वास को प्रेमचंद के बाद रेणु ने उकेरा. मुझे हाता रहीम उसी क्रम का एक सफल उपन्यास लगता है. उत्तरप्रदेश के गांवों की ठेठ बोली, मुहावरों का आश्रय लेकर सरकार की नीतियों, बाबू-अफ़सरों की मनोवृत्तियों और आम आदमी की पारिवारिक-आर्थिक-मनोवैज्ञानिक दशाओं का सफलतापूर्वक चित्रण करता हुआ हाता रहीम सर्वजन हिताय का आशावादी संदेश देता है.''

-अमिताभ श्रीवास्तव

पंचकन्या (मनीषा कुलश्रेष्ठ, सामयिक प्रकाशन)

''पंचकन्या सही मायनों में मनीषा कुलश्रेष्ठ का प्रतिनिधि उपन्यास कहा जा सकता है. इसमें वह अपने पूरे रौ में नज़र आती हैं और अपनी बात कहने के लिए पुराणों में वर्णित पंचकन्याओं की उपकथाओं का सहारा लेती हैं. आज की आधुनिक पंचकन्याओं से उनकी तुलना और कथा के बीच गुंथी उपकथाएं उपन्यास को पठनीय बनाती हैं. मज़बूत और स्वतंत्र स्त्री पात्र मनीषा की ताक़त होते हैं और वह यहां भी बरक़रार है.''

-विमल चन्द्र पाण्डेय

''अपने ढंग, रूप और शैली का यह एक अलग ही किस्म का उपन्यास है. उपन्यास मूलत: स्त्रीविमर्श से संबंधित है, पर यह सीधा-सीधा संवादात्मक या कथात्मक नहीं है. इसका नयापन इसकी शैली में भी है और कथाक्रम में भी. भारतीय शास्त्रीय नृत्य और पश्चिमी नृत्य शैलियों का किंचित विस्तार से वर्णन कहीं पात्र के बहाने और कहीं स्वतन्त्र भी कथा की गति को शिथिल करता लगता है. स्त्री जीवन की विविधताओं और जटिलताओं का ताना-बाना बुनती कथा बौद्धिक अधिक हो जाती है-विशेषकर पश्चिमी विद्वानों के विचारों भारतीय मान्यताओं से तालमेल बिठाती हुई.''

-अमिताभ श्रीवास्तव

समरसिद्धा (संदीप नैयर, पेंगुइन)

''वैसे तो यह पौराणिक पृष्ठभूमि की कथा है लेकिन इसके बारीक़ कथातंतु आज के समय की नसों में भीतर तक पैबस्त हैं. प्रेम, त्याग, वीरता, महत्वाकांक्षा और करुणा जैसे तत्व समेटे यह उपन्यास जो सबसे महत्वपूर्ण बात कहता है वह है राज्य के विद्रोहियों के प्रति राज्य और>

* प्रकाशक का दावा है कि ये कहानियां अब तक अप्रकाशित थीं

FEM-HIN-024-029_kaushik R1.indd 22 21/08/15 3:14 pm
FEM-HIN-024-029_kaushik R1.indd 23 21/08/15 3:14 pm

स्वयं विद्रोहियों का नज़रिया. इसकी उपकथा में नक्सलवाद की परछाइयां हैं.''

-विमल चन्द्र पाण्डेय

''आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व की इस काल्पनिक प्रेम कथा के माध्यम से लेखक ने तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थिति को सजीव करने की सफल चेष्टा की है. पात्रों का चरित्र चित्रण जिस कौशल और बारीक़ी से किया गया है उसने एक पुरानी और कल्पनाप्रधान प्रेम कहानी को जीवंत बना दिया है. प्रेम, प्रतिशोध, जाति-पाति, छोटे-बड़े राज्यों की परस्पर प्रतिस्पर्धा और बीच में गूंथी गई तांत्रिक पद्धतियों की मायिक संरचना उपन्यास को रुचिकर बनाते हैं.''

-अमिताभ श्रीवास्तव

उपसंहार

(काशीनाथ सिंह, राजकमल)

''कृष्ण के अंतिम दिनों की कथा कहता यह

उपन्यास एक दिलचस्प पाठकीय अनुभव प्रदान करता है. महाभारत के महायुद्ध के ख़त्म होने के बाद जो औचक शांति छा गई है, उसकी तह में जाता हुआ यह उपन्यास कृष्ण की व्यक्तिगत ज़िंदगी में गहरे उतरता है. यह सिर्फ़ कृष्ण की कहानी नहीं है, लेखक ने इसे आज के एकाकीपन से अनूठे अंदाज़ में जोड़ा है. भाषा इसकी ताक़त है, लेकिन अध्यायों के पहले के गद्य को कविता की तरह तोड़कर लिखने का औचित्य साबित नहीं होता.''

-विमल चन्द्र पाण्डेय

''सिद्धहस्त और सुपरिचित कथाकार काशीनाथ सिंह का उपसंहार कृष्ण के जीवन के उत्तर पक्ष के अंतिम दिनों पर आधारित है. कृष्ण महाभारत के प्रकट-अप्रकट नायक रहे हैं. महाभारत की समाप्ति के बाद कृष्ण की द्वारका तेज़ी से पतन और विनाश की ओर बढ़ती जाती है और कृष्ण राज्य और वंश के विनाश की स्थिति को देख-समझ कर भी कुछ नहीं कर पाते. बीच-बीच के काव्यात्मक गद्य ने कथा की मार्मिकता को गहरा किया है और एक महापुरुष की चमत्कारिक या ईश्वरीय

उपन्यास

- **देवांगना***, आचार्य चतुरसेन, राजपाल ऐंड सन्ज़
- **उपसंहार**, काशीनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन
- **एक ख़्वाहिश ने...**, मृदुला बाजपेयी, मंजुल प्रकाशन
- **हाता रहीम**, वीरेन्द्र सारंग, राधाकृष्ण प्रकाशन
- **काले अध्याय**, मनोज रुपड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ
- **गायब होता देश**, रणेन्द्र, पेंगुइन
- **समरसिद्धा**, संदीप नैयर, पेंगुइन
- **पंचकन्या**, मनीषा कुलश्रेष्ठ, सामयिक प्रकाशन
- **अरस-परस**, यशवंत शेखावत, बोधि प्रकाशन
- **फांस, संजीव**, वाणी प्रकाशन
- **ये दाग़ दाग़ उजाला...**, प्रकाश कान्त, अंतिका प्रकाशन
- **बनारस टॉकीज़**, सत्य व्यास, हिन्द युग्म

अलौकिक उपलब्धियों का क्रमश: बिगड़ता रूप इस प्रकार की कथा-शैली के माध्यम से अधिक कारुणिक बन गया है. ''

-अमिताभ श्रीवास्तव

फांस (संजीव, वाणी)

''फांस विदर्भ क्षेत्र में किसानों की आत्महत्याओं के पीछे कारणों की पड़ताल करता है. किसानों की टूटती हिम्मत के पीछे सरकारी योजनाएं और नीतियां किस कदर ज़िम्मेदार हैं, उपन्यास इसका सजीव चित्रण है. विकास की दिशाहीन दौड़ किस तरह देश के अन्नदाता किसान को एक मरती हुई प्रजाति में बदलती जा रही है, इसका हौलनाक चित्र संजीव ने खींचा है.''

-विमल चन्द्र पाण्डेय

''किसान को केंद्र में रखकर लिखे जानेवाले औपन्यासिक साहित्य की परम्परा में पहला प्रधान नाम प्रेमचंद का आता है, जिनकी परम्परा में संजीव हैं और प्रेमचंद के गोदान की परम्परा में फांस. उपन्यास में मूल कथा ग्रामीण जीवन की पीड़ाभरी, कसमसाहटपूर्ण और अपनी संस्कृति से उखड़ती हुई एक लम्बी परम्परा के अंत की पूर्व सूचना जैसी है, जिसकी संरचना, पात्रों के सजीव चित्रण, रचना के औपन्यासिक तत्व और प्रकृति के बनते-उजड़ते स्वरूप के परिप्रेक्ष्य में प्रभावी ढंग से की गई है.'' -अमिताभ श्रीवास्तव

विधा: कविता

जीवन भी कविता हो सकता है

(विष्णु नागर, अंतिका प्रकाशन)

''सीधे-सादे वाक्य विन्यासों में ठोस विचार विष्णु नागर की कविताओं की पहचान है. वे बिना किसी झिझक के अपनी बात कहनेवाले दृष्टिवान रचनाकार हैं. कविता के माध्यम से वे अपनी तमाम भावनाएं प्रकट कर सकते हैं. इस चक्कर में कई बार उनकी कविताएं सीधी और सपाट भी हो जाती हैं, दो टूक अपनी बात कहने के लिए वे इस तरह का जोखिम मोल लेते रहते हैं. जीवन भी कविता हो सकता है का मुख्य आकर्षण व्यंग्य बोध है.'' -हरि मृदुल

''यह वरिष्ठ कवि विष्णु नागर की चिरपरिचित शैली का ही संकलन है, जहां उनका पत्रकार उनके कवि पर बुरी तरह हावी दिखाई देता है. बेहद ज़रूरी विषयों के चयन के बावजूद नागर जी उन्हें कविता में ढालने का धैर्य नहीं दिखा पाते और पहले पहल आए विचार को ही कच्चा-पक्का सामने रख देते हैं. नागर जी एक व्यंग्य लेखक भी हैं और व्यंग्य उनकी कविताओं का एक अनिवार्य हिस्सा हमेशा से रहा है, लेकिन इस संकलन में यह बोध कई जगह कमज़ोर हुआ है तो आलोचक जैसी कविता में तो वह चुटकुले के स्तर पर उतर जाता है.'' -अशोक कुमार पाण्डेय

सृष्टि पर पहरा

(केदारनाथ सिंह, राजकमल प्रकाशन)

''केदारनाथ सिंह की कविताओं में जीवन के विविध स्वरूप मौजूद हैं. नए विचार और ›

* प्रकाशक का दावा है कि यह उपन्यास अब तक अप्रकाशित था

FEM-HIN-024-029_kaushik R1.indd 24 21/08/15 3:15 pm